छुटकारे का इतिहास – भाग 7

अध्याय 48: क्रिसमस का रहस्य

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ फिलिप्पियों 2:5 निकालें। जब हम क्रिसमस के रहस्य के बारे में सोचते हैं, तो ऐसा नहीं है कि पिछले सप्ताह हमने रोमियों अध्याय 9 में पर्याप्त रहस्य में डुबकी नहीं लगाई थी।

मैं आपके सामने तीन सत्यों को रखना चाहता हूँ, केवल याद रखने के लिए। एक, हमें याद रखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का स्वभाव रहस्यमय हो सकता है। आप इसके बारे में सोचें, वह तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर है। आप वहाँ रूकें, और हम पहले ही दुविधा में पड़ गए हैं। ठीक? आप वहीं रूकें और हम पहले ही हमारे सीमित दिमाग और तर्क की सीमाओं के पार चले गए हैं। यहाँ कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि यहाँ रहस्य है। वह पूर्णतः हमारे ऊपर है, फिर भी हमारे निकट है। वह सामर्थी और धैर्यवान दोनों कैसे हो सकता है? वह सर्वोच्च और स्वतंत्र है, क्रोधी और करूणामय है, न्यायी और क्षमा करने वाला है, महान और अच्छा है।

यदि पिछले सप्ताह आपको परमेश्वर को उस छोटे डिब्बे में रखने में परेशानी हुई जिसे आपने उसके लिए बनाया था, तो मेरा उद्देश्य आँशिक रूप से पूर्ण हो चुका है। यदि पिछले सप्ताह आपने सोचा, "वाह, परमेश्वर का चरित्र मेरी कल्पनाओं से कहीं बढ़कर रहस्यमयी है," तो उससे भागे नहीं। मैं यहाँ पर सावधान रहना चाहता हूँ। जब कभी हम किसी बात को रहस्यमय मानते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम बौद्धिक रूप से आलसी हैं। जब कभी हम किसी बात को समझ नहीं पाते, तो हम केवल यह कह कर आगे नहीं बढ़ जाते हैं कि "ठीक है, यह रहस्य है।" हम अपने दिमाग को बाहर का रास्ता नहीं दिखा रहे हैं। परन्तु साथ ही, बाइबल की गवाही हमें विविध बिन्दुओं पर रहस्य में छोड़ देती है। हमें कुछ ऐसे सत्यों के साथ छोड़ देती है जिन्हें एक–दूसरे के साथ रखने पर, हमारी सीमित बुद्धि के लिए यह समझना कठिन हो जाता है कि ये दोनों एक साथ कैसे जा सकते हैं।

टोजर ने कहा, "अपने हाल पर छोड़ दिए जाने पर, हम तुरन्त परमेश्वर को साधारण शब्दों तक सीमित कर देते हैं। हम उसे वहाँ पहुँचान चाहते हैं जहाँ हम उसका उपयोग कर सकें। हम एक ऐसा परमेश्वर चाहते

हैं, जिसे कुछ हद तक, हम नियंत्रित कर सकें।" और फिर उसने कहा, "प्रेम और विश्वास परमेश्वर के रहस्य में सामान्य हैं। तर्क को बाहर श्रद्धा से घुटने टिकाने दो।"

और इसे आज हम फिलिप्पियों अध्याय 2 में देखेंगे। यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों है। यह एक रहस्य है। अब, यह रोमियों 9 से थोड़ा अलग है। यह रोमियों अध्याय 9 के समान मानवीय संरचना के लिए इतना अपमानजनक नहीं है, लेकिन यह भी एक रहस्य है। अब, एक दूसरा सत्य जिसे हमें याद रखने की आवश्यकता है, विशेषतः परमेश्वर की सर्वोच्च करूणा के प्रकाश में, मनुष्य की जिम्मेदारी को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यह स्पष्टतः एक बड़ा खतरा है जो परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में उच्च विचार के साथ आता है, कि हम मनुष्य की जिम्मेदारी को कम कर देते हैं या अनदेखा कर देते हैं।

परन्तु आप पूरे पवित्रशास्त्र को देखें और परमेश्वर के वचन पर नजर डालें। आप देखते हैं परमेश्वर का वचन अविश्वासियों से कहता है, "अपने पाप को पहचानो और परमेश्वर की करूणा को प्राप्त करो।" यह सन्देश उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जिसने पिछले सप्ताह सन्देश को सुना था, उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जो आज सन्देश को सुन रहा है, सारी सृष्टि में उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जिसने अपने पापों के उद्धार के लिए कभी मसीह पर भरोसा नहीं किया है। अपने पाप को पहचानें। देखें कि आपने अपनी इच्छा से जान–बूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का निर्णय लिया है। आप उसके विरूद्ध हो गए हैं। आपने एक पवित्र परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया है, और अपने विद्रोह में, आप अनन्त दण्ड के योग्य हैं।

और उसने संसार के प्रति अपने प्रेम के कारण अपने पुत्र को भेजा। जैसे स्वर्गदूत ने घोषणा की, "संसार के सारे लोगों के लिए आनन्द का समाचार, एक उद्धारकर्ता जन्मा है।" और परमेश्वर की इच्छा है कि इस ग्रह का प्रत्येक व्यक्ति उद्धार पाए। उसकी करूणा आपके लिए उपलब्ध है। उसे पाएँ; उसकी करूणा को पाएँ। अपने द्वारा रचे हुए लोगों के लिए प्रेम और अनुग्रह के कारण मसीह को क्रूस पर मरने के लिए भेजने के द्वारा उसने जो किया है उस पर भरोसा करें।

तस्वीर यही है। अपने पाप को पहचानें और उसकी करूणा को प्राप्त करें। "प्रभु का नाम लें," रोमियों 10 कहता है, "और तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। अपने मुँह से अंगीकार करो कि यीशु ही प्रभु है। अपने मन में विश्वास करो कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। तो तुम्हारा उद्धार हो जाएगा।" अविश्वासियो, अपने पाप को पहचानें और परमेश्वर की करूणा को पाएँ।

और विश्वासियो, नम्रता से परमेश्वर की आराधना करें। यह संभव नहीं है कि आप रोमियों अध्याय 9 पर विश्वास करें और घमण्ड के साथ जाएँ। और फिर भी, अक्सर, जो परमेश्वर की सर्वोच्चता के प्रति उच्च विचार का समर्थन करते हैं वे भी अपने धर्मविज्ञान में अत्यधिक अहंकारी हो सकते हैं। वहाँ न जाएँ। परमेश्वर की सर्वोच्च करूणा के प्रकाश में यह संभव नहीं है। नम्रता से उसकी आराधना करें और शुद्धता से परमेश्वर के साथ चलें। क्या आप देखते हैं कि परमेश्वर कैसे अनन्त रूप से, अनुग्रहपूर्वक, सर्वोच्चता से आपके उद्धार में रूचि रखता है, आपके उद्धार में शामिल है। अब उसका विरोध न करें।

पाप और घमण्ड और अशुद्धता को छोड़कर उस पर भरोसा करें। आपके जीवन के हर विवरण के बारे में उस पर भरोसा किया जा सकता है। शुद्धता में उसके साथ चलें। और पूर्ण मन से परमेश्वर पर भरोसा रखें। यह सब बातों में परमेश्वर की सर्वोच्चता की खूबसूरती है, यह जानना कि जब हमारे जीवन की परिस्थितियों की बात आती है तो शक्तिहीन नहीं है। वह हमारे जीवन की परिस्थितियों के ऊपर सामर्थी है, जिससे आप जान सकते हैं, कि इस पल, आज चाहे आप के जीवन में जो भी हो, इस सप्ताह आपके जीवन में चाहे जो भी हो– कौन जानता है कि इस सप्ताह आपके जीवन में या मेरे जीवन में क्या होने वाला है? परमेश्वर जानता है, और परमेश्वर इन सबके ऊपर सर्वोच्च है, और उसने इनमें छोटी से छोटी बात का आपकी भलाई और अपनी महिमा के लिए प्रयोग करने का वायदा किया है।

उस पर भरोसा करें। उस चट्टान पर आप खड़े हो सकते हैं। पूरे मन से उस पर भरोसा रखें और निरन्तर प्रार्थना करें। जब हम परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में सोचते हैं, तो कुछ लोग कहेंगे, "यदि सब कुछ ऐसा ही होना है जैसा होना निर्धारित किया गया है, स्पष्टतः इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं क्या करता हूँ या कोई और व्यक्ति क्या करता है। प्रार्थना का महत्व क्यों है? मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ, परन्तु सब कुछ वैसा ही होगा जैसा परमेश्वर ने उनके लिए होना निर्धारित किया है।"
नहीं, इस प्रकार के विचार को कभी वचन में नहीं देखा गया है। हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा उन्हें अपने स्वरूप के अनुरूप बनाता है और संसार में अपने उद्देश्यों को पूर्ण करता है। मैं अपने पुत्रों, कालेब और जोशुआ के बारे में सोचता हूँ। क्या आप निश्चित रूप से जानते हैं कि वे उद्धार पायेंगे? वे तीन और चार वर्ष की आयु के हैं। क्या मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि वे उद्धार पायेंगे? नहीं, मैं नहीं जानता।

परन्तु हर सुबह, मैं उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना और विनती करता हूँ, कि वह उनके प्रति अपना प्रेम और अपनी करूणा दिखाए। कि वह उन्हें अपनी ओर खींचे। और मैं विश्वास के साथ उन्हें सुसमाचार सुनाता हूँ, प्रतिदिन जब मैं उन्हें पालता हूँ और उन्हें ताड़ना देता हूँ और उनसे प्रेम करता हूँ और उन्हें पोषित करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे सुसमाचार को देखें क्योंकि मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने निर्धारित किया है कि वह अपने लोगों की प्रार्थना और सुसमाचार की घोषणा के द्वारा लोगों को अपनी ओर खींचे। और मैं चाहता हूँ कि यह प्रकट हो, और मैं चाहता हूँ कि उनके पिता के रूप में यह प्रतिदिन मेरे जीवन में सत्य हो।

अतः, तस्वीर यह है, जब हम इस प्रकार के पदों पर आते हैं, जैसे, रोमियों 9, या फिलिप्पियों 2, जैसा हम आज करने वाले हैं, तो ऐसा नहीं है कि हमारे सारे सवालों का उत्तर मिला जाएगा। पिछले सप्ताह मैं ने बताया था कि शायद इसे सुनने के बाद हमारे मन में ज्यादा सवाल उत्पन्न हो जाएँ। परन्तु बात यह हैः मैं अच्छी तरह से आपकी चरवाही करना चाहता हूँ। और मेरा मानना है कि आपकी अच्छी तरह से चरवाही करने का हिस्सा है कि मैं पवित्रशास्त्र के कठिन पदों से कन्नी न काटूँ।

हम अपने अन्तिम सत्य पर आते हैं जिसके बारे में मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ। परमेश्वर के वचन पर भरोसा किया जा सकता है। हमारे धर्मविज्ञान को आगे बढ़ाने में परमेश्वर के वचन पर भरोसा किया जा सकता है। मैं उसे पुनः कहना चाहता हूँ जो मैं ने पिछले सप्ताह कहा था। हर सप्ताह, मेरा लक्ष्य, किसी निश्चित धर्मविज्ञानी एजेन्डा को बढ़ावा देना, या हमें किसी निश्चित धर्मविज्ञानी प्रणाली पर लाना नहीं है। हर सप्ताह मेरा लक्ष्य है, कि जो पद हमारे सामने है उस पर प्रचार करूँ। पद जैसे बताता है, उसे मैं वैसे ही कहना चाहता हूँ। और यदि पद नहीं कहता है, तो मैं भी उसे नहीं कहना चाहता।

मेरा लक्ष्य है कि हम हर सप्ताह परमेश्वर के वचन में से होकर चलें। और जब हम रोमियों 9:11 में देखते हैं कि चुनने में परमेश्वर का उद्देश्य स्थिर रहेगा, तो हम उस पर विश्वास करेंगे। और फिर जब हम यूहन्ना 3:16 में देखते हैं कि उसने सारे जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए, तो हम उस पर विश्वास करेंगे। और जब हम इफिसियों 1 में देखते हैं कि परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले हमें उस में चुना, तो हम उस पर विश्वास करेंगे। और फिर जब हम 2 पतरस 3:9 में देखते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हर व्यक्ति उद्धार पाए, और प्रत्येक व्यक्ति मन फिराए, तो हम उस पर विश्वास करेंगे।

और खूबसूरती यह है, कि जब हम ऐसा करते हैं, तो वचन हमारे विश्वास के परिवार की अगुवाई करेगा। खूबसूरती यह है, कि कोई भी एक वचन इन सबका सार नहीं बताता है। एक खतरनाक परीक्षा यह है कि एक सप्ताह रोमियों 9 को देखना और कहना, "ठीक है, तो इसका अर्थ है पवित्रशास्त्र की शेष बातें खिड़की से बाहर।" नहीं, यह सब एक साथ चलता है। और यदि हम एक पद को लेकर, उसे दूसरे पदों से अलग कर दें, तो हम आँशिक रूप से उसके अर्थ से चूक जायेंगे।
यह गलातियों के समान है। यदि हमारे पास केवल गलातियों की पत्री ही होती, तो सुसमाचार के बारे में हमारी तस्वीर टेढ़ी होती। या यदि हमारे पास केवल याकूब की पत्री होती, तौभी सुसमाचार की हमारी तस्वीर पूर्ण नहीं होती। और खूबसूरती यह है कि हमारे पास गलातियों और याकूब और फिलिप्पियों और रोमियों और शेष सब एक साथ हैं, इसीलिए हम वह करते हैं जो हम हर सप्ताह करते हैं। इसी कारण हम यह करते हैं। एक के बाद एक, हर सप्ताह हम पवित्रशास्त्र के पदों को देखते हैं, और हम भरोसा रखते हैं कि परमेश्वर अपने आत्मा से, अपने वचन के द्वारा, हमारे सीमित मनों और पापी दिलों को अपनी असीम महिमा, और अपनी असीम बुद्धि, और अपने बहुमूल्य प्रेम और अपनी करूणा के अनुरूप बनाएगा।

और हाँ, यहाँ हम संघर्ष कर रहे हैं, परन्तु एक दिन आ रहा है जब पाप नहीं रहेगा, और हम उसे जैसा वह है वैसा ही देखेंगे। और फिर सवाल नहीं रहेंगे। अतः, उस दिन तक, हम खोजना चाहते हैं, प्रयत्न करना चाहते हैं, उसके वचन पर भरोसा करना चाहते हैं कि वह उसके नाम की खातिर हमारी अगुवाई करे और हमारा मार्गदर्शन करे। अतः, याद रखने के लिए कुछ सत्य। और आज जब हम इस रहस्य के बारे में बात करते हैं, क्रिसमस के रहस्य के बारे में, तब भी इन्हें ध्यान में रखें।

क्रिसमस पर हमें यह सवाल पूछना है। हमें यह पूछने की हिम्मत करनी है, "यीशु कौन है? यह चरनी में जन्मा बालक कौन है?" यह ऐतिहासिक, महत्वपूर्ण, अद्‌भुत, और व्यक्तिगत प्रश्न है। यह ऐतिहासिक है। यह एक मुख्य प्रश्न था जिसके बारे में कलीसिया की आरम्भिक सदियों में कलीसियाई अगुवों ने वाद–विवाद किया था। इस प्रश्न के उत्तरों के आधार पर झूठी शिक्षाएँ फैली। यह महत्वपूर्ण है; यह अनिवार्य है। यह प्रश्न स्पष्टतः पारम्परिक यहूदी मत और मसीहियत के बीच दरार उत्पन्न करता है। यह प्रश्न मुसलमानों के लिए, यहोवा साक्षियों के लिए, और एकतावादियों के लिए ठोकर का कारण है जब वे मसीहियत के बारे में सोचते हैं।

यह ऐतिहासिक है। यह एक अद्‌भुत प्रश्न है, जब आप इसके बारे में सोचते हैं, यह कहना कि चरनी में जन्मा बालक देहधारी परमेश्वर है। सम्पूर्ण मसीहियत में यह संभवतः सबसे साहसी दावा है। आप मेरे साथ

इसके बारे में सोचें। जब आप इस दावे को स्वीकार कर लेते हैं, तो शेष सब अपने आप सही हो जाता है। यदि आप जानते हैं कि यीशु ने पानी को बनाया तो क्या उसे पानी पर चलते देखना इतना अधिक आश्चर्यजनक है? क्या उसे 5 रोटी और दो मछली से 5,000 से अधिक लोगों को तृप्त करते हुए देखना वास्तव में इतना अधिक आश्चर्यजनक है, जब हम यह जानते हैं कि उसी ने रोटी और मछली और प्रत्येक व्यक्ति के पेट को बनाया जो भोजन को पचाता है?

क्या यह वास्तव में इतना आश्चर्यजनक है कि वह मुर्दों को जिन्दा करता है, वह स्वयं जीवित हो उठता है, जब आप देहधारण के बारे में सोचते हैं – उसे मानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं और उसे गले लगाते हैं, तो यह वास्तव में इतना आश्चर्यजनक नहीं है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा। पहले यह आश्चर्यजनक है कि वह मरा। ठीक? यह अद्‌भुत विचार है। और यदि यीशु परमेश्वर है, यदि यह बालक परमेश्वर है, तो यह इतना अद्‌भुत है जिसे आप वर्ष के इस समय घण्टियों और जूतों से दबा नहीं सकते हैं।

और यह एक निजी प्रश्न है। इस प्रश्न के उत्तर के इस संसार के इतिहास में प्रत्येक व्यक्ति, और इस पृथ्वी पर के प्रत्येक व्यक्ति के लिए परिणाम हैं। वे सब, उनका जीवन, अनन्तकाल के लिए उनका जीवन, इस बात पर निर्भर है कि वे इस प्रश्न का कैसे उत्तर देते हैं। अनन्तकाल के लिए आपका जीवन इस बात पर निर्भर है कि आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं। आप यीशु के बारे में जो कहते हैं वही सब कुछ निर्धारित करता है कि आप कैसे जीवन व्यतीत करते हैं।

यह प्रश्न हर बात को निर्धारित करता है कि हम कैसे जीते हैं, और इसलिए मैं इस प्रश्न पर ध्यान देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम महसूस करें, कि कलीसिया में भी, यदि हम सावधान नहीं हैं, तो क्रिसमस के आस–पास हम चरवाहों और स्वर्गदूतों और ज्योतिषियों और युसुफ और मरियम और चरनी और बैलों और बहुत वस्तुओं के बारे में बात करते हैं। परन्तु क्रिसमस का रहस्य प्राथमिक रूप से यीशु के जन्म की परिस्थितियों में नहीं पाया जाता है। क्रिसमस का रहस्य मुख्यतः चरनी के बालक की पहचान में पाया जाता है। उसके जन्म की परिस्थितियों में नहीं, परन्तु इस बालक की पहचान में। और रहस्य यहीं है, इस वास्तविकता में कि परमेश्वर ने अपनी महिमा को एक रोते–बिलखते, बिस्तर को भिगोन वाले बालक में प्रकट किया है, जो आकाश की ओर देख रहा है, और केवल अपने बिस्तर पर हिल सकता है। यह आश्चर्यजनक विचार है।

अतः, मैं चाहता हूँ कि हम इस पद को देखें। और हम पहले ही पद 5 और 6 को पढ़ चुके हैं जो हमें इस पहले सत्य पर लाता है जिसे हमें इस बालक के बारे में देखने की आवश्यकता है। और हम इसे देखेंगे, और फिर हम थोड़ा विराम लेंगे। और हम अगले सत्य को देखेंगे।

पहला सत्य, चरनी में पड़ा बालक परमेश्वर है। चरनी में पड़ा बालक परमेश्वर है। अब, हमारे पास सारे पवित्रशास्त्र में जाने का समय नहीं है, यह सोचने के लिए कि इसे हम परमेश्वर के वचन में कैसे देखते हैं, परन्तु यह सारे पवित्रशास्त्र की गवाही है। फिलिप्पियों 2:6 यही कहता है, "वह परमेश्वर के स्वरूप में था, वह परमेश्वर की समानता में था।" हमारे पास इन सारे स्थानों पर जाने के लिए समय नहीं है, इसलिए आप उन्हें लिख सकते हैं। इब्रानियों 1:3, "यीशु परमेश्वर के तत्व की छाप है।" अब, हम इसे कैसे जानते हैं? उसे सुनें। यीशु की सुनें। स्वयं यीशु ने अपनी दिव्यता की गवाही दी। उसने कहा कि वह पिता के साथ एक है। यूहन्ना 10:30, "मैं और पिता एक हैं।" यूहन्ना में सारे "मैं हूँ" कथन, विशेषतः यूहन्ना 8:58, "इससे पहले कि अब्राहम जन्मा, मैं हूँ।" यीशु सदा से विद्यमान होने का दावा कर रहा है, अब्राहम से भी पहले "मैं हूँ।" और लोग जानते थे कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था क्योंकि उसके ऐसा कहते ही उन्होंने उसे पत्थरवाह करने का प्रयत्न किया।

उसने दावा किया कि वह और पिता एक हैं, और उसे मनुष्यों के पाप क्षमा करने और उनका न्याय करने का अधिकार है। मरकुस 2:1–11, एक लकवे के रोगी को चंगा करना। उसे चंगा करने से पहले, यीशु कहता है, "पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।" और भीड़ कहती है, "परमेश्वर के सिवा कौन पापों को क्षमा कर सकता है?" वे जानते थे कि पापों की क्षमा करने के विशेषाधिकार और अधिकार का दावा करके वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था। सी.एस. लुईस के लिए यही सर्वाधिक आश्चर्यजनक था, और वह यह कहते हुए चला गया, "यह व्यक्ति दावा करता है कि जब कोई दूसरा व्यक्ति पाप करता है, तो उसे ठेस लगती है।"

और मनुष्यों का न्याय करना, यूहन्ना अध्याय 5, पद 16 से पद 47 तक, आप देखते हैं यीशु कह रहा है कि वह सब लोगों का न्यायी है, कि एक दिन सब लोग उसके सामने न्याय के लिए खड़े होंगे। और उसे प्रकृति, रोग, और मृत्यु के ऊपर अधिकार है। वह तूफानों को शान्त करता है; वह आँधियों और लहरों को शान्त करता है। वह पाँच रोटी और दो मछली से इन सारे लोगों को तृप्त करता है। अपनी सामर्थ और अपने ही अधिकार के द्वारा वह लोगों के रोगों को दूर करता है, और अन्त में मृतकों में से जी उठता है। ये सारी वास्तविकताएँ और यीशु के वचन और कार्य इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि वह परमेश्वर है। इसलिए, उसकी सुनें।

और फिर दूसरों की सुनें, पवित्रशास्त्र में दूसरों की गवाही। वह सारी वस्तुओं का अनन्त सृष्टिकर्ता है। यह यूहन्ना के सुसमाचार का आरम्भ है। हमें चरनी की ओर ले जाने की बजाय, यूहन्ना कहता है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा," मसीह के द्वारा, यह यूहन्ना 1:1–3 में है, "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।"

कुलुस्सियों 1:15, पौलुस कहता है, "मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है। उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई। सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।" कुलुस्सियों 2:9 कहता है, "मसीह में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।" वह सारी वस्तुओं का अनन्त सृष्टिकर्ता है, और वही सारी वस्तुओं को स्थिर रखने वाला है। यह एक महान पद है, कुलुस्सियों 1:17, "मसीह सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं।" वह सर्वोच्च प्रभु और परमेश्वर है।

यीशु हमें यह दिखा रहा है, हमें यह बता रहा है, दूसरे यह कह रहे हैं, यूहन्ना 20:28, थोमा, यीशु के जी उठने के बाद, थोमा यीशु के पास आता है और उसे देखता है, जी उठे प्रभु को। वह कहता है, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।" और अब यीशु की बारी थी। यदि उसे विश्वास न होता कि वह परमेश्वर था, यदि वह नहीं जानता कि वह परमेश्वर था, तो थोमा से वह कहता, "नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। तुम ने गलत समझ लिया है, थोमा।" परन्तु नहीं, यीशु प्रभु और परमेश्वर के रूप में स्तुति को स्वीकार कर रहा है, और दूसरे प्रभु और परमेश्वर के रूप में उसकी स्तुति कर रहे हैं।

अतः, बात यह हैः यदि यीशु ने जो किया और कहा वह सत्य है, और जो दूसरों ने कहा, तो हमारे पास बहुत कम विकल्प हैं। यदि यीशु ने कहा और किया, और यदि उसके आस–पास के लोगों ने ये बातें कहीं, तो इससे अलग विकल्प बहुत कम हैं। पहला, हम कह सकते हैं, "यीशु एक पौराणिक कथा है।" क्या वह एक पौराणिक नायक है? क्या यह सब बनाया हुआ है? सुसमाचार के ये सारे अभिलेख, क्या उन्हें केवल ऐसे ही बनाया, निर्मित किया गया है? और हमारे पास इसकी गहराई में जाने के लिए समय नहीं है, परन्तु वास्तविकता यह है, सुसमाचार के अभिलेख प्राचीन संसार की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय और प्रमाणिक हैं।

सांसारिक और धार्मिक विद्वान, पुरातत्ववेत्ता सब एक स्वर में सुसमाचारों की सत्यता की गवाही देते हैं। कोई कहेगा, "नहीं, यह सब बनाया हुआ है। यीशु एक पौराणिक नायक है।" यदि वह एक पौराणिक नायक नहीं

है, तो क्या वह झूठा है? क्या वह झूठा है? लगभग सारे लोग– अन्यजाति, सांसारिक, विद्वान सब लोग कहते हैं कि यीशु एक नम्र और विनीत अगुवा था। अब, यदि यीशु परमेश्वर नहीं था, और वह यह कहते हुए फिरा कि वह परमेश्वर था, तो क्या आप उसे नम्र कहेंगे? यदि मैं दावा करूँ कि मैं परमेश्वर हूँ, तो क्या आपका पहला जवाब होगा, "यह सबसे नम्र व्यक्ति है?" नहीं।

अतः, यदि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था, और वह जानता था कि वह परमेश्वर नहीं था, तो इसका मतलब वह झूठा था। आप कहते हैं, "शायद वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था, और वास्तव में उसने सोचा कि वह परमेश्वर था, परन्तु वह नहीं था। इसका मतलब वह सनकी था। यह तीसरा विकल्प है। यदि यीशु ने कहा कि वह परमेश्वर था, और वह झूठ नहीं बोल रहा था, तो वह पागल था। अब, स्पष्ट है कि इतिहास में बहुत कम लोगों ने उसे मानसिक रोगी कहा है। यहाँ तक कि सांसारिक विद्वानों ने भी उसे संसार के इतिहास में महानतम धार्मिक गुरूओं में से एक कहा है।
परन्तु मैं चाहता हूँ आप देखें कि यह संभव नहीं है। यीशु के लिए संसार के इतिहास में महानतम धार्मिक गुरूओं में से एक होना संभव नहीं है। क्योंकि उसकी शिक्षा का केन्द्र यह दावा था कि वह दिव्य था, कि वह परमेश्वर था। और जब तक आप इसे गले लगाने को तैयार नहीं हैं, तब तक वह या तो झूठा है, या पागल, एक पौराणिक नायक है, या वह प्रभु है।

सी.एस. लुईस ने इसका सर्वोत्तम तर्क दिया, "आप उसे मूर्ख कहकर चुप करा सकते हैं। आप उस पर थूक सकते हैं और एक दुष्टात्मा के रूप में उसे मार सकते हैं। या आप उसके चरणों पर गिरकर उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हैं। परन्तु हम कभी ऐसी मूर्खता न करें कि वह एक महान मानवीय गुरू है। उसने हमारे लिए यह विकल्प नहीं छोड़ा है। उसने ऐसा चाहा भी नहीं।"

पवित्रशास्त्र की गवाही स्पष्ट है। यीशु पूर्णतः परमेश्वर है। चरनी का बालक, इम्मामुएल, परमेश्वर हमारे साथ है। मैं चाहता हूँ कि हम संक्षेप में इस अगले सत्य के बारे में सोचें, यह सत्य कि यह चरनी में पड़ा बालक केवल परमेश्वर ही नहीं है। चरनी में पड़ा बालक मनुष्य है, मनुष्य की समानता में जन्मा, दास का रूप लिया। परमेश्वर देह में, परमेश्वर मनुष्य के रूप में, मानवीय देह के साथ। शारीरिक रूप से एक बालक के रूप में जन्मा, एक देह के साथ, एक देह जिसे भूख और प्यास लगती है, एक देह जिसे नींद की आवश्यकता है।

इस पर विश्वास न करें कि "छोटा प्रभु यीशु, रोता नहीं है।" यह सत्य नहीं है। किस माता–पिता ने कभी अपने बच्चे के बारे में ऐसा कहा होगा? बच्चा बहुत रोता है, और वह बच्चा था, मानवीय देह के साथ, मानवीय मन के साथ। लूका 2:52 कहता है, "वह बुद्धि में बढ़ता गया।" उसने खाना और बात करना और पढ़ना और लिखना सीखा। यह उसकी मानवीयता है, मानवीय भावनाओं के साथ। वह हँसता और रोता। वह परेशान हो जाता, और वह दुःखी हो जाता। वह आनन्दित और क्रोधित होता।

मैं चाहता हूँ आप देखें कि यीशु न केवल पूर्णतः परमेश्वर है। बहनो और भाइयो, यीशु पूर्णतः हमारे जैसा है। उसकी मनुष्यता को कम न करें और इस प्रक्रिया में आपके और मेरे साथ उसकी पहचान की खूबसूरती से न चूक जाएँ। परमेश्वर हम से दूर, अलग नहीं है। वह वास्तव में हमारे साथ है। वह हमारे संघर्षों से परिचित है।

इब्रानियों 4 कहता है कि यीशु हमारे ही समान परखा गया, चाहे यह मत्ती अध्याय 4 में मरूभूमि में शैतान द्वारा परखा जाना हो। चाहे पतरस द्वारा कहना, "नहीं, तू क्रूस पर नहीं मर सकता।" चाहे गतसमने में अपने सामने के कटोरे के बारे में सोचकर पसीने का लहू के रूप में निकलना हो। चाहे लोगों द्वारा चिल्लाना हो, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।"

इब्रानियों 2 कहता है, "वह परखा गया, और इसलिए, वह उनकी सहायता कर सकता है जो परखे जाते हैं।" वह हमारे संघर्षों से परिचित है। वह हमारे दुख से परिचित है। "दुखों से उसकी जान पहचान थी," यशायाह 53 कहता है। हमारे साथ अतुल्य सहानुभूति के योग्य है और हमारे कष्टों से परिचित है, जिसका सबसे स्पष्ट उदाहरण क्रूस है।

मैं चाहता हूँ कि आप मसीह के मनुष्य होने की खूबसूरती के बारे में सोचें जबकि यह आपके दर्द और आपकी कमजोरी और आपके संघर्षों और आपके दुख और आपके कष्ट से संबंधित है। मैं चाहता हूँ कि आप यह देखें कि यह मानवता और दिव्यता के बारे में केवल उच्च धर्मविज्ञानी बातचीत ही नहीं है। यह आपके जीवन से संबंधित है।

जब आप दुख, दर्द, और कष्ट को सहते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि स्वर्ग में, पिता के दाहिने हाथ, यीशु, उद्धारकर्ता है जो आपकी कमजोरियों के साथ सहानुभूति प्रकट कर सकता है, जो आपके समान ही दुख, और दर्द और कष्ट को जानता है। वह हमसे अलग नहीं है। वह हमारे समान ही है, हमारी

कमजोरियों से सहानुभूति प्रकट करता है, ताकि जब हम जीवन के विभिन्न अनुभवों से गुजरते हैं, तो हम जान सकें कि स्वर्ग में हमारा एक उद्धारकर्ता है जो यह सब जानता है– हमारे कष्टों, दुखों, और पीड़ाओं को जानता है।

यह एक अद्भुत सत्य है। यह बालक निष्पाप उद्धारकर्ता है, जो नम्र बना, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। यह अपमान के द्वारा प्रकाशन है। सर्वोच्च सृष्टिकर्ता सृष्टि का दास बन जाता है। सबका सर्वोच्च सृष्टिकर्ता सबका दास बन जाता है। "मनुष्य के स्वरूप में हो गया," पद 7 कहता है। अब यह "मनुष्य की समानता में हो गया" का दोहराव प्रतीत होता है।

परन्तु वास्तविकता यह है कि यहाँ कुछ और है जिसकी ओर फिलिप्पियों 2 संकेत कर रहा है। हाँ, वह मनुष्य था, परन्तु जब लिखा है, "मनुष्य के स्वरूप में होना," तो ध्यान इस बात पर है कि दूसरे उसे कैसे देखते हैं। अब मेरे साथ चलें; यह विशाल है। दूसरे उसे कैसे देखते थे। दूसरे लोग उसे एक मनुष्य समझते थे, एक ऐसा व्यक्ति जो बिल्कुल उनके ही समान था।

आप मत्ती अध्याय 13 में जाएँ और आप देखते हैं कि उसके अपने ही नगर में, लोग कहते हैं, "इस व्यक्ति को ये सब बातें कहाँ से प्राप्त हुईं? क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है।" और उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई। लोग उसे इस प्रकार देखते थे जैसे वह उनसे बिल्कुल भी अलग नहीं था। यहाँ नम्रता को देखें। सृष्टिकर्ता इस हद तक झुक गया कि उसकी सृष्टि ने भी उसे नहीं पहचाना। जिसकी महिमा सम्पूर्ण पृथ्वी में फैली है उसे उसके साथ वाले लोग ही ग्रहण नहीं करते हैं। उसकी चुनी हुई प्रजा जिसे उसने पुराने नियम में चुना था।

न केवल यह कि उन्होंने उसे नहीं पहचाना, बल्कि वह उनके अधीन भी था। उसने अपने माता–पिता की आज्ञा मानी। यह अजीब है जब आप इसके बारे में सोचते हैं, उन अभिभावकों की आज्ञा मानना जिन्हें आपने रचा हो? निश्चित रूप किसी न किसी बिन्दू पर यह कहने की परीक्षा आई होगी, "तुम कौन हो मुझे बताने वाले कि मुझे क्या करना चाहिए? मैं ने तुम्हें बनाया है।" और एक शिशु के रूप में लोगों ने उसे भोजन खिलाया। वह बढ़ा, लोगों के लिए कार्य किया। आपको कैसा महसूस होगा यदि आप एक ऐसे व्यक्ति के लिए नौकरी करते हैं जिसे आपने अपने हाथों से बनाया हो, और अपने स्वामी के रूप में उनके अधिकार के अधीन रहना? तस्वीर यही है।

सोचें यह कैसे किया जा रहा है। इस्राएल के सबसे अधिक धार्मिक भक्तों ने भी उसे नहीं पहचाना। वास्तव में, यूहन्ना 8:48 कहता है, "तू तो सामरी है और तुझ में दुष्टात्मा है।" दूसरे शब्दों में, तू एक देशद्रोही और शैतान है। उन्होंने उसको ऐसा ही प्रत्युत्तर दिया– उस दिन तक जब उन्होंने उस पर झूठा आरोप लगाया और झूठा मुकदमा चलाया और उसके मुँह पर थूका। और उसने एक शब्द भी नहीं कहा। यह नम्रता के द्वारा प्रकाशन है। उसने अपने आपको नम्र किया।

और यह प्रतिस्थापन द्वारा उद्धार है। वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। सिद्ध पुत्र पाप की कीमत को चुकाता है। वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, जबकि उसमें कोई पाप नहीं था, और पाप की मजदूरी मृत्यु है। वास्तविकता यह है, कि अपनी मानवीयता और दिव्यता में, केवल वही हमारे पापों के लिए कीमत चुकाने में अद्वितीय रूप से योग्य था। इसी कारण, 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 की भाषा में, मैं आपके लिए नहीं मरा, और आप मेरे लिए नहीं मरे। हमें एक–दूसरे के लिए क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया क्योंकि हम में पाप है। हम इस प्रकार एक–दूसरे का स्थान लेने के योग्य नहीं हैं।
आप इसके बारे में सोचें, दो समूहों में सुलह कराने के लिए, एक मध्यस्थ को दोनों समूहों से घनिष्टता से परिचित होना चाहिए। यही तस्वीर है। जॉन स्टॉट ने कहा, "प्रतिस्थापन की संभावना स्थानापन्न की पहचान पर निर्भर है।" यीशु को यह बात अद्वितीय मध्यस्थ बनाती है कि वह पूर्ण परमेश्वर है, परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने में पूरी तरह योग्य है। और वह पूर्ण मनुष्य है, पूरी तरह उस स्थान पर खड़े होने के योग्य है जहाँ हमें खड़ा होना चाहिए था। और इसीलिए वह आया था।

और देहधारण के रहस्य के बीच, देहधारण के उद्देश्य से न चूक जाएँ। यथार्थ यह है कि यीशु मरने के लिए आया। अब, हमारे लिए यह बात सामान्य है क्योंकि हम सबके लिए मृत्यु अपरिहार्य है। ठीक? हम में से प्रत्येक के लिए, सबके लिए, मृत्यु अपरिहार्य है, क्योंकि हमने पाप किया है। लेकिन उसमें कोई पाप नहीं था। सिद्ध पुत्र, सिद्ध आज्ञाकारी, उसके लिए मृत्यु अपरिहार्य नहीं थी।

और लोग यीशु द्वारा की गई बहुत सी बातों को बढ़ा कर दिखाने का प्रयास करेंगे, सांसारिक विद्वान भी कहते हैं, "वह प्रेम के बारे में सिखाने और सेवा और नम्रता का आदर्श दिखाने के लिए आया। और वह धीरज और दया दिखाने आया। और उसने लोगों के रोगों को दूर किया। ये सारी अच्छी बातें।" और हाँ, उसने यह सब किया। परन्तु वास्तविकता यह है, यदि वह इन सारे कार्यों को करके वहीं पर रूक जाता, तो वह उद्धारकर्ता नहीं होता। लोगों को पाप से उद्धार देने के लिए, उसे मरना था। उसे आपके लिए और मेरे लिए वह कीमत चुकानी थी।

और इसी कारण आरम्भ से ही, आप देखते हैं यीशु अपनी सेवकाई में इसके बारे में बात करते हैंः वह क्रूस पर मरने वाले हैं; वह क्रूस पर मरने वाले हैं। एक दिन आ रहा है जब मनुष्य का पुत्र दुख उठाएगा और मर जाएगा। इसीलिए वो आया था। इसके बारे में सोचें। उन तस्वीरों के बीच जो क्रिसमस के समय हमारे मन में होती हैं, उन मुलायम, कोमल हाथों को चरनी में देखना, जिन्हें इसलिए बनाया गया था कि एक उन में कीलें ठोकी जाए। वे गुलाबी, नरम पाँव, चलने में असमर्थ, वे इसलिए बनाए गए थे कि वे एक दिन धूल भरी पहाड़ी पर चढ़कर क्रूस की ओर जाएँ। यह अनमोल सिर इसलिए बनाया गया था कि एक दिन सैनिक काँटों के मुकुट को उसमें गहरे धँसा दें। कपड़े में लिपटा हुआ यह बालक इसलिए रचा गया था कि एक दिन सैनिक भाले से इसे बेधेंगे और लहू और पानी बहेगा।

देहधारण का उद्देश्यः वह मरने के लिए जन्मा था। और फिर पौलुस फिलिप्पियों 2:7 में कहता है, "यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु भी।" यह ऐसा है मानो वह अभिभूत हो गया हो क्योंकि यह एक शर्मनाक मृत्यु है। पहली सदी के मापदण्डों के अनुसार, इससे घृणित अपमानजनक अनुभव और कुछ नहीं था। परमेश्वर, जिसने ब्रह्माण्ड को रचा, मानवीय अपमान की पराकाष्ठा को सह रहा है, उपहास करने वाली भीड़ के सामने आकाश के बीच नग्न लटका हुआ है। एक शर्मनाक मौत। एक दर्दनाक मौत। सारी संभावित मौतों में से सर्वाधिक पीड़ाजनक, पीटा गया और बेंतों की मार पड़ी और कोड़े लगाए गए और फिर काठ के एक टुकड़े पर कीलों से ठोक दिया गया। एक शापित मौत।

आप एक अन्यजाति के दृष्टिकोण से इसके बारे में सोचें, विशेषतः रोमी दृष्टिकोण से, क्रूस पर चढ़ाए हुए व्यक्ति के बारे में सोचना – सबसे क्रूर रोमी नागरिक को भी यह सब नहीं सहना पड़ता था। फिर आप यहूदी दृष्टिकोण से इसके बारे में सोचें। गलातियों 3:13, व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 को उद्धृत करते हुए, कहता है, शापित है वह जो काठ पर लटकाया जाता है। पौलुस कह रहा है, "यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु भी," सर्वाधिक शर्मनाक, दर्दनाक, शापित मौत। वह इसी के लिए जन्मा था; इसी प्रकार मरने के लिए, ताकि उसके परिणामस्वरूप हम जीने के लिए पुनः जन्म प्राप्त करें।

1 पतरस 2:24, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ।" क्रूस मृत्यु से जुड़ी देहधारण की खूबसूरती को देखें। उसकी लज्जा हमारा आदर बन जाती है। परमेश्वर के सम्मुख हम लज्जा और मृत्यु के योग्य हैं। और परमेश्वर हमें मसीह की धार्मिकता से ढाँपता है, और हमें उसकी उपस्थिति में आनन्द मिलता है। उसका

दर्द हमारा आनन्द बन जाता है। उसके कोड़ों के द्वारा, उसके घावों के द्वारा, उसके कष्ट के द्वारा, हम चंगे होते हैं, और उसका शाप हमारे लिए आशीष बन जाता है।

गलातियों 3:13, "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया।" यह सब इसलिए कि वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु भी। चरनी का यह बालक योग्य है। वह निष्पाप उद्धारकर्ता के रूप में प्रशंसा के योग्य है, जो पापियों के लिए मरने क्रिसमस पर जन्मा। चरनी का यह बालक महिमा प्राप्त प्रभु है।

यह नये नियम का केन्द्र है। यह आरम्भिक कलीसिया का केन्द्र है। नये नियम में लगभग 750 बार यीशु को प्रभु कहा गया है। और क्रिसमस की कहानी का केन्द्र यह है कि यह बालक वास्तव में सबका प्रभु है। जब आप यहूदी और अन्यजातियों के दृष्टिकोण से फिलिप्पियों 2:9–11 को कहते हुए देखते हैं, और आपको पता चलता है कि प्रभु होने का अर्थ है कि वह सर्वोच्च स्थान में राज्य करता है।

लिखा है परमेश्वर ने उसे महिमा दी। मसीह को इतना ऊँचा स्थान दिया जाता है कि उससे ऊपर कोई नहीं है। और उसे सारी वस्तुओं से ऊपर ठहराया जाता है। वह बहुत से ईश्वरों के बीच महानतम नहीं है। वही एकमात्र परमेश्वर है।

और प्रभु की यह तस्वीर– हमने देखा कि पुराने नियम में परमेश्वर मुख्यतः यहोवा, प्रभु के रूप में प्रकट होता है। यह उसका नाम है जिसे हमने मुख्य रूप से पुराने नियम मे महिमा पाते हुए देखा, फिर यीशु को महिमा प्राप्त प्रभु के रूप में देखना। और कोई ऊँचा नहीं है। सबसे ऊँचा स्थान। वह प्रभु है, जो सर्वोच्च स्थानों में राज्य करता है। उसकी सामर्थ असीम है। उसका नाम उसके अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है।

यहीं पर आप इस बात पर आते हैं कि अन्यजाति पाठक, यूनानी पाठक, इस शब्द प्रभु "कुरियोस" को कैसे सुनते थे। यह एक ऐसा शब्द है जो सेवकों के ऊपर स्वामी का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त होता है, प्रभु, अधिकार, राज्य करना, शासन करना, आज्ञा देना, माँग करना, जो कुछ भी इसमें शामिल है। और वास्तविकता यह है, कि यीशु के पास उन सबको बचाने का अधिकार है जो उस पर भरोसा रखते हैं। उसके पास आपको पापों से बचाने की सामर्थ है, और उसके पास आपके जीवन में राज्य करने की सामर्थ है, आपके प्रत्येक निर्णय पर राज्य करने का अधिकार, आपकी सम्पत्ति पर अधिकार, आपके प्रत्येक स्वप्न पर अधिकार। हमारे समय में कुछ लोग हैं जिन्होंने एक अन्तर लाने का प्रयत्न किया है और कहते हैं, "आप

यीशु को उद्धारकर्ता मान सकते हैं, लेकिन प्रभु नहीं।" यह सत्य नहीं है। वह, उद्धारकर्ता के रूप में, महिमा प्राप्त प्रभु है, और उसके राज्य की अधीनता को स्वीकार किए बिना अपने पापों से उद्धार पाने का दावा करना मूर्खता है।

उसकी सामर्थ असीम है। वह वैश्विक स्तुति के योग्य है। हर घुटना टिकेगा। "घुटना टिकाना," पुराने नियम में प्रयुक्त अभिव्यक्ति जो अगाध श्रद्धा और समर्पण और आराधना को दिखाती है। एक आराधक की तस्वीर जो उसकी उपस्थिति में खड़ा नहीं रह पाता है जिसकी आराधना की जा रही है, इसलिए वह अपने घुटनों पर आ जाता है। प्रत्येक घुटना स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे। इसमें सारे घुटने आ जाते हैं। हर स्वर्गदूत, हर पवित्र स्वर्गदूत, हर गिरा हुआ स्वर्गदूत। बहनो और भाइयो, शैतान और उसके दूत भी घुटने टेकेंगे। हम में से प्रत्येक जन, इस ग्रह का प्रत्येक व्यक्ति, सम्पूर्ण इतिहास में प्रत्येक व्यक्ति प्रभु के रूप में मसीह के सामने घुटने टेकेगा। हर जीभ और हर भाषा में यह अंगीकार किया जाएगा।

वह वैश्विक स्तुति के योग्य है, और वह अन्तिम उद्देश्य को पूर्ण करता है। परमेश्वर ने यीशु को सर्वोच्च महिमा दी। हम देहधारण के रहस्य को देख रहे हैं। हम इस सम्पूर्ण तस्वीर में पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा को देख रहे हैं। पिता पुत्र को सर्वोच्च महिमा देता है, उसे ऐसा नाम देता है जो सब नामों से ऊँचा है। कि यीशु के नाम के आगे, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे प्रत्येक घुटना टिके, और हर एक जीभ यह अंगीकार करे कि यीशु ही प्रभु है। पिता परमेश्वर की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है।

वास्तविकता यह है कि पिता परमेश्वर ने पुत्र को इसलिए भेजा कि वह हमें छुड़ाने के लिए पाप की कीमत को चुकाए, हमारा अपने आप से मेल कराए, कि पवित्र आत्मा परमेश्वर हमारी आँखों को खोले कि हम उसकी महिमा को देखें, उसकी खूबसूरती को देखें, अपनी आवश्यकता को देखें, मसीह की महिमा के लिए, और पिता की महिमा के लिए उसे प्रभु के रूप में अंगीकार करें। मसीह के अपमान में परमेश्वर ने महिमा पाई; मसीह की महिमा में परमेश्वर ने महिमा पाई, ताकि हमारे होठों से और हमारे जीवनों से यह शब्द निकले स्तुति, महिमा और आदर सदा–सर्वदा तक परमेश्वर के लिए है।

अतः, हमें जो निर्णय लेना है, क्रिसमस के रहस्य में हमारा जिस निर्णय से सामना हुआ है, क्या आप प्रभु के रूप में यीशु का इन्कार करेंगे? उसे एक अच्छा गुरू न कहें। संभव नहीं है। उसे चाहे पौराणिक नायक कहें, या झूठा, या पागल कहें, लेकिन उसे एक अच्छा गुरू न कहें। पौराणिक नायक, झूठे या पागल के

रूप में उसका तिरस्कार करें, अब प्रभु के रूप में उसका तिरस्कार करें, और उस समय उसके सामने घुटने टिकाएँ।

मुख्य बात यह है जिसे मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति सुने। वास्तविकता यह है कि एक दिन प्रत्येक व्यक्ति उसके सामने घुटने टेकेगा और उसे प्रभु कहेगा। यह कोई विकल्प नहीं है। यह निश्चित है। प्रत्येक घुटना एक दिन उसके सामने टिकेगा और उसे प्रभु कहेगा। सवाल यह है, क्या आप घुटने टेकेंगे, या फिर आप उस समय घुटने टेकेंगे जब बहुत देर हो जाए? और यदि आप उस समय तक प्रतीक्षा करते हैं, इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद तक, मैं लापरवाह होऊँगा यदि इस क्रिसमस के अवसर पर मैं परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर आपसे यह न बताऊँ, कि यदि आप घुटने टिकाने के लिए उस समय तक प्रतीक्षा करते हैं, तो आप अनन्त दण्ड के भागी होंगे। आप अकेले अपने पाप में पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े होंगे, और आपको उसके अनन्त न्याय में अपने पाप का उचित और न्यायपूर्ण दण्ड मिलेगा।

कृपया क्रिसमस को उपभोक्तावादी लोगों के लिए व्यवसायिक लाभों की श्रंखला से बढ़कर सोचें। यह अनन्त वास्तविकता की बाजी है कि आप क्रिसमस के रहस्य को जवाब कैसे देते हैं। प्रभु के रूप में उसका तिरस्कार करें, और अनन्त दण्ड में उसके सम्मुख घुटने टिकाएँ। मैं हर व्यक्ति के विनती करना चाहता हूँ, यीशु को प्रभु के रूप में महिमा दें। आज ही घुटने टेकें। उसके शासन और राज्य को मान लें, अपने जीवन के ऊपर उसके अच्छे और अनुग्रहकारी और करूणामय शासन और राज्य का अंगीकार करें। आपके सारे पापों को माफ करने के लिए, क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा आपके सारे पापों को ढाँपने के लिए उस पर भरोसा करें। और जिसने आपको रचा, जिसने आपको बनाया, जो जानता है आपके लिए सर्वोत्तम क्या है, उससे कहें, "मैं आप पर भरोसा करता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ कि आप वास्तव में प्रभु हैं।"

अपने मुँह से अंगीकार करें कि यीशु ही प्रभु है, अपने मन में विश्वास करें कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो आपका उद्धार हो जाएगा। आज ही घुटने टेकें और इसके प्रति निश्चित हो जाएँः आगे अनन्त उत्सव है, जहाँ हम स्वर्ग में सर्वदा के लिए पिता परमेश्वर की महिमा के लिए मसीह की स्तुति की घोषणा में मगन रहेंगे।

सी.एस. लुईस ने इसका सर्वोत्तम सार बताया जब उन्होंने कहा, "हम मसीह का क्या बनाएँ? यह सवाल ही नहीं है कि हम उसका क्या बनाएँ। यह सवाल पूर्णतः इसके बारे में है कि वह हमें क्या बनाने का इरादा रखता है। आपके लिए अवश्य है कि आप या तो इस कहानी को स्वीकार करें या अस्वीकार करें।"